अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर

पत्राचार प्राकृत सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम परीक्षा–2021

प्रश्नपत्र – द्वितीय

प्राकृत व्याकरण एवं रचना (i)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

प्र. 1 निर्देशानुसार निम्नलिखित संज्ञा एवं सर्वनाम के रूप सभी विकल्पों में लिखिए। 1 x 4 = 4

(i) राअ (चतुर्थी एकवचन)

(ii) वारि (सप्तमी बहुवचन)

(iii) ता (स्त्रीलिंग – द्वितीया बहुवचन)

(iv) हरि (षष्ठी एकवचन)

प्र. 2 निर्देशानुसार निम्नलिखित क्रियाओं के रूप सभी विकल्पों में लिखिए। 2 x 4 = 8

(i) भण (वर्तमानकाल उत्तमपुरुष एकवचन)

(ii) वंद (विधि आज्ञा अन्यपुरुष बहुवचन)

(iii) हो (वर्तमानकाल मध्यमपुरुष एकवचन)

(iv) सुण (भूतकाल मध्यमपुरुष बहुवचन)

प्र. 3(क) निर्देशानुसार निम्नलिखित क्रियाओं के कृदन्त रूप लिखिए। 1 x 4 = 4

(i) सिक्ख (संबंधक भूतकृदन्त)

(ii) सोह (वर्तमानकृदन्त स्त्रीलिंग प्रथमा बहुवचन)

(iv) भुंज (विधिकृदन्त नपुंसकलिंग प्रथमा एकवचन)

(iv) ठा (हेत्वर्थक कृदन्त)

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में से नियमित–अनियमित भूतकालिक कृदन्त छाँटकर उनके लिंग, विभक्ति और वचन बताइए।

1 x 2= 2

(i) रामेण सत्तू मुओ। (ii) मुणिणा सो भणिदो।

(ग) निम्नलिखित वाक्यों में से कृदन्त छाँटकर उनके नाम लिखिए और जहाँ आवश्यक हो, वहाँ विभक्ति और वचन बताइए।

1 x 6= 6

(i) ससा देवं अच्चमाणा हरिसेदि।
(ii) हरिणा णरो कोक्किदो।
(iii) ताउ धावन्ता गच्छन्ते।
(iv) तुम्हेहिं पावाणि छंडिअव्वाणि।
(v) बालओ पढिदुं आगच्छदु।
(vi) पुत्ती मायं पेच्छित्ता हरिसिआ।

प्र. 4(क)निम्नलिखित वाक्यों में से स्वार्थिक प्रत्यय छाँटिए। 1 x 2= 2

(i) गुरुल्ला परमेसरं वंदिरे।
(ii) पुत्तओ बप्पं माणिस्सिदि।

(ख) निम्नलिखित शब्दों में कोई एक स्वार्थिक प्रत्यय लगाकर प्रथमा विभक्ति के एकवचन और बहुवचन के रूप लिखिए।

1 x 2= 2

(i) जीव (ii) माया

प्र. 5(क) कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य का परिचय दीजिए।

1 x 3= 3

(ख) निम्नलिखित वाक्यों के वाच्य बताइए। 1 x 5= 5

(i) तुब्भे उज्जमिहिह।
(ii) सीहेहिं गज्जिअं।
(iii) जणेरीओ सुणुणो पालेन्ति।
(iv) जइणा सिक्खा धारिता।
(v) तुमए वत्थूणि सिंचिदव्वाणि।

(ग) निर्देशानुसार निम्नलिखित वाक्यों का वाच्य परिवर्तन कीजिए।
2 x 4=8

(i) बालएणं खेलितं। (कर्तृवाच्य)
(ii) अम्मि सयमु। (भाववाच्य)
(iii) मायाइ हरिसिस्सइ। (कर्तृवाच्य)
(iv) बालआ खेलन्ति। (भाववाच्य)

(घ) निर्देशानुसार निम्नलिखित वाक्यों का वाच्य परिवर्तन कीजिए।
1 x 4=4

(i) रहुणन्दणेण रक्खसा हणिता। (कर्तृवाच्य)
(ii) अम्हेहिं जंबू सिंचियव्वा। (कर्तृवाच्य)
(iii) राया वया पालेउ। (कर्मवाच्य)
(iv) हणुवन्तो सीयं रक्खेइ। (कर्मवाच्य)

(च) निम्नलिखित अनियमित कर्मवाच्यों से वाक्य बनाकर हिन्दी में उनके अर्थ लिखिए। 1 x 4=4

(i) बज्झइ (ii) दीसइ (iii) थुव्वइ (iv) कीरइ

प्र. 6(क)निम्नलिखित वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद कीजिए। 1 x 15=15

(i) जब तक तुम पढोगे तब तक मैं तुमको पालूँगा।
(ii) तुम पुत्र के बिना घर मत जाओ।
(iii) प्रयास करते हुए मामा द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है।
(iv) कन्याओं द्वारा गीत सुना जाता है।
(v) मेरा पुत्र सुख चाहता है।
(vi) वह तृप्ति के लिए भोजन खाये।
(vii) मैं गंगा की कथा सुनूँगा।
(viii) वह परीक्षा के लिए पढ़ती है।
(ix) पत्नी वस्त्रों को धोयेगी।
(x) तुम जल को स्पर्श करो।
(xi) प्रज्ञा ज्ञान को प्रकट करती है।
(xii) ऊँट घास चरता है।
(xiii) उन सब के द्वारा जागा गया।
(xiv) कन्याएँ डरकर रुकती हैं।
(xv) धागा गलकर टूटता है।

(ख)निम्नलिखित वाक्यों की संरचना लिखिए। 3 x 5=15

(i) गिरिणो रामो पडए।
(ii) पोत्तो ताउ पणमिहिए।
(iii) गुरुणा सिक्खा पसराविअव्वा।
(iv) माया पुत्तिं णच्चेउं उट्ठेदि
(v) कण्णा णच्चन्ताउ थक्किहिन्ति।

प्र. 7(क)निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए। 1 x 4=4

(i) बालआ हसिदूणं खेलसु।

(ii) सीहो धेणू मारिओ।

(iii) हं वणे गच्छए।

(iv) तरुहिंतो फलो पडियं।

(ख)रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। 1 x 4=4

(i) रहुणन्दणो .....सुणइ।

(ii) नणन्दा.....बिहइ।

(iii) तस्स माया.....गच्छेदि।

(iv) मए.....कुल्लिअव्वं।

प्र. 8 निम्नलिखित वाक्यों का पठित पद्धति से व्याकरणिक विश्लेषण कीजिए। 2 x 5=10

(i) तया ते मित्ता कहिंति।

(ii) किमेत्थ आगमण–पओयणं ?

(iii) एसा दुद्धर–चरिया उवइट्ठा जणवरेहि सव्वेहिं।

(iv) भावो कहि पढमलिंगं ण दव्वलिंगं च जाण परमत्थं।

(v) न य दुक्खा विमोयंति एसा मज्झ अणाहया।

◇◇◇

अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर

पत्राचार प्राकृत सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम परीक्षा–2021

प्रश्नपत्र – प्रथम

प्राकृत कथा एवं काव्य

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

प्र. 1(क)प्राकृत कथा साहित्य की परम्परा पर प्रकाश डालते हुए कुवलयमाला पर टिप्पणी कीजिए। 10 x 1=10

अथवा

प्राकृत कथाओं का महत्व बताते हुए वसुदेवहिण्डि पर टिप्पणी लिखिए।

(ख)निम्नलिखित कथांशों का हिन्दी अनुवाद कीजिए। 10 x 4=40

(i) एगंमि नयरे एगो अमंगलिओ मुद्धो पुरिसो आसि। सो एरिसो अत्थि, जो को वि पभायंसि तस्स मुहं पासेइ, सो भोयणं पि न लहेज्जा। पउरा वि पच्चूसे कया वि तस्स मुहं न पिक्खंति। नरवइणा वि अमंगलियपुरिसस्स वट्टा सुणिआ।

(ii) एगया 'संसारो असारो, लच्छी वि असारा, देहोवि विणस्सरो, एगो धम्मो च्चिय परलोगपवन्नाणं जीवाणमाहारु' त्ति उवएसदाणेण नियभत्ता सव्वणधम्मेण वासिओ कओ। एवं सासूमवि कालंतरे बोहेइ। ससुरं पडिबोहिउं सा समयं मग्गेइ।

(iii) चउरो वि ते वरा एगम्मि चेव दिणे परिणेउं आगया परोप्परं कलहं कुणन्ति। तओ तेसिं विसमे संगामे जायमाणे बहुजणक्खयं दट्ठूण

अग्गिम्मि पविट्ठा सुमइकन्ना। तीए समं णिविडणेहेण एगो वरो वि पविट्ठो। एगो अट्ठीणि गंगप्पवाहे खिविउं गओ। एगो चिआरक्खं तत्थेवि जलपूरे खिविऊण तद्दुक्खेणं मोहमहागय–गहिओ महीयले हिण्डइ। चउत्थो तत्थेव ठिओ तं ठाणं रक्खंतो पइदिणं एगमन्नपिंडं मुअंतो कालं गमेइ।

(iv) तत्थ णं एगे कुम्मए ते पावसियालए चिरंगए दूरगए झाणित्ता सणियं सणियं एगं पायं निच्छुभइ। तए णं ते पावसियालया तेणं कुम्मएणं सणियं सणियं एगं पायं नीणियं पासंति। पासित्ता ताए उक्किट्ठाए गईए सिग्घं चवलं तुरियं चंडं जइणं वेगिइं जेणेव से कुम्मए तेणेव उवागच्छंति।

प्र. 2(क)प्राकृत मुक्तक काव्य का स्वरूप समझाते हुए वज्जालग्गं पर टिप्पणी लिखिए। 10 x 1=10

अथवा

प्राकृत काव्य परम्परा पर प्रकाश डालते हुए गउडवहो पर टिप्पणी लिखिए।

(ख)निम्नलिखित गाथाओं का हिन्दी अनुवाद कीजिए तथा शब्दार्थ लिखिए। 10 x 4=40

(i) झायहि पंच वि गुरवे, मंगलचउसरणलोयपरियरिए।
णर–सुर–खेयर–महिए, आराहणणायगे वीरे।।

(ii) अणथोवं वणथोवं, अग्गीथोवं कसायथोवं च।
न हु भे वीससियव्वं, थोवं पि हु तं बहु होइ।।

(iii) दुक्खं कीरइ कव्वं कव्वम्मि कए पउंजणा दुक्खं।
संते पउंजमाणे सोयारा दुल्लहा हुंति।।

(iv) सत्तुमित्ते य समा पसंसणिंदाअलद्धिलद्धिसमा।
तणकणए समभावा पव्वज्जा एरिसा भणिया।।

अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर

पत्राचार अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम परीक्षा–2015

प्रश्नपत्र – द्वितीय

अपभ्रंश व्याकरण एवं रचना (i)

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 100**

प्र. 1 निर्देशानुसार निम्नलिखित संज्ञा एवं सर्वनाम शब्दों के रूप सभी विकल्पों में लिखिए। 1x4=4

(i) गामणी (तृतीया, एकवचन)

(ii) धेणु (द्वितीया, बहुवचन)

(iii) का (पंचमी, एकवचन)

(iv) एत (नपुंसकलिंग) (षष्ठी, एकवचन)

प्र. 2 निर्देशानुसार निम्नलिखित क्रियाओं के रूप सभी विकल्पों में लिखिए।

2x4=8

(i) हो (वर्तमानकाल, मध्यम पुरुष, एकवचन)

(ii) पेस (विधि, अन्य पुरुष, बहुवचन)

(iii) ठा (भविष्यत्काल, अन्य पुरुष, एकवचन)

(iv) रूस (भविष्यत्काल, उत्तम पुरुष, बहुवचन)

प्र.3(क) निर्देशानुसार निम्नलिखित क्रियाओं के कृदन्त रूप लिखिए।

1x4=4

(i) ण्हा (सम्बन्धक कृदन्त)

(ii) हस (विधि कृदन्त, स्त्रीलिंग, प्रथमा एकवचन)

(iii) णच्च (भूतकालिक कृदन्त, पुल्लिंग, प्रथमा, बहुवचन)

(iv) उड्ड (वर्तमान कृदन्त, नपुंसकलिंग, प्रथमा, बहुवचन)

(ख) निम्नलिखित कृदन्तों में से नियमित–अनियमित भूतकालिक कृदन्त छाँटिए और उनके लिंग, विभक्ति और वचन बताइए। 1x2=2

(i) किआओ –

(ii) हसिअ –

(ग) निम्नलिखित वाक्यों में से कृदन्त छाँटिए और उनके नाम लिखिए जहाँ आवश्यक हो, वहाँ विभक्ति और वचन भी बतलाइए :– 1x6=6

(i) पुत्तो लज्जन्तो अच्छइ।

(ii) सो परमेसरु सुमरन्तो उट्ठइ।

(iii) ससाउ णच्चन्ताउ थक्कन्तु।

(iv) पइं असच्चु ण बोल्लिअव्वु।

(v) सच्चु सिज्झन्ता सोहेसइ।

(vi) नरिंदेण हसिअव्वु।

प्र.4(क) निम्नलिखित वाक्यों में से स्वार्थिक प्रत्यय छाँटिए। 1x2=2

(i) कमलडअ विअसइ।

(ii) रयणुल्ला तुट्टन्ति।

(ख) निम्नलिखित शब्दों में कोई एक स्वार्थिक प्रत्यय लगाकर प्रथमा विभक्ति के एकवचन व बहुचवन के प्रयोग लिखिए। 1x2=2

(i) पढम

(ii) जीव

प्र.5(क) कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य का परिचय दीजिए। 1x3=3

(ख) निम्नलिखित वाक्यों के वाच्य बताइए। 1x5=5

(i) अम्हे जीवहुं। कर्तृवाच्य

(ii) हउं हसोप्पिणु जीवेसउं। कर्तृवाच्य

(iii) नरिंदु परमेसरा पणमइ। कर्तृवाच्य

(iv) सेणावइं सरिया देखिआ। कर्मवाच्य

(v) मित्तेण हसिज्जइ। भाववाच्य

(ग) निम्नलिखित वाक्यों का वाच्य–परिवर्तन कीजिए। 2x4=8

(i) मायाए पुत्ता पालिज्जहिं (कर्तृवाच्य) माया पुत्ता पालइ

(ii) बालएं पुप्फाइं तोडियाइं (कर्तृवाच्य) बाला पुप्फाइं तोडिअं

(iii) बालओ कहा सुणइ (कर्मवाच्य) बालएण कहा सुणिज्जइ

(iv) णरिंदो णयरजणाइं जाणइ (कर्मवाच्य) णरिंदेण णयरजणा जाणिज्जन्ति

(घ) निर्देशानुसार निम्नलिखित वाक्यों का वाच्य–परिवर्तन कीजिए। 1x4=4

(i) सो णच्चइ (भाववाच्य) तेण णच्चिज्जइ

(ii) जुवइए धिइ धारिअव्वा (कर्तृवाच्य) जुवइ धिइ धारउ

(iii) हउं हसउं (भाववाच्य) मइं हसिज्जइ

(iv) रज्जु सिक्खाओ जाणइ (भाववाच्य) रज्जुएं जाणिज्जइ

(च) निम्नलिखित अनियमित कर्मवाच्यों से अपभ्रंश में वाक्य बनाकर हिन्दी में उनका अर्थ लिखिए। 1x4=4

(i) आढप्पइ मइं थुइ आढप्पइ

(ii) सुव्वहि तुहुं सुव्वहि

(iii) वुच्चइ नरिंदेण वुच्चइ

(iv) दीसइ मइं कमल दीसइ

प्र.6(क) निम्नलिखित वाक्यों का अपभ्रंश में अनुवाद कीजिए। 1x15=15

(i) तुम छटपटाते हो। तुहुं छडप्पडहि

(ii) दादा घूमने के लिए उठे। पिआमहो घुमेवं उट्ठउ

(iii) अभिलाषाएँ शान्त होंगी। अहिलासाउ समेसहिन्ति

(iv) राक्षस छटपटाता हुआ मरा। रक्खसो छडप्पडन्तो मुओ

(v) पानी द्वारा झरा गया। वारिएं णिज्झरिअ

(vi) विमानों द्वारा उड़ा जाता है। विमाणेहिं उड्डिज्जइ

(vii) सूर्य द्वारा उगा जाना चाहिए।

(viii) राजा राज्यों की रक्षा करता है। राया रज्जाइं रक्खइ

(ix) मैं उसको स्पर्श करता हूँ। हउं तं

(x) मेरे द्वारा ग्रन्थ पढ़ा गया। मइ गन्थ पढिअ

(xi) साधुओं द्वार वस्तु देखी जानी चाहिए। साहुहिं वत्थु

(xii) जामुन के पेड़ की आयु बढ़ती है। जंबूहे आउ वड्ढइ।

(xiii) बालक सर्प से डरता है। बालओ सप्पहे डरइ।

(xiv) जो मनुष्य थकता है, वह सोता है। जु णरो थक्कइ तं सुवइ

(xv) जहाँ तुम्हारा गाँव है, वहाँ मेरा घर है।

(ख) निम्नलिखित अपभ्रंश वाक्यों की संरचना लिखिए। 3x5=15

(i) तें आउ पेच्छिअव्व। 3/1 1/1 विधि कृ 1/1

(ii) रिसिहिं पण्णाजाणिआ। 3/2 1/2 भू कृ 2/1

(iii) पिआमहु पोत्तु वद्धावेवं गच्छइ। 1/1 2/1 हेत्वर्थक व 3/1

(iv) महु पुत्ती सुहु इच्छइ। 6/1 1/1 2/1 व 3/1

(v) बालहो तुम्हइं गंथु पढह। 8/2 2/2 2/1 वि 2/2

प्र.7(क) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए। 1x4=4

(i) मइं परमेसरु अच्चउं।

(ii) मायाए कहा कहिज्जन्ति।

(iii) सच्चु सिज्झन्तु सोहेसन्तु।

(iv) सो विमाणाइं उड्डइ।

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। 1x4=4

(i) पुत्तो उच्छहन्तो ..... ।

(ii) माइए ..... कोक्किज्जउ।

(iii) गुरुएं परिक्ख ..... ।

(iv) ..... लज्जन्तो।

प्र. 8 निम्नलिखित वाक्यों का पठित पद्धति से व्याकरणिक विश्लेषण कीजिए। 2x5=10

(i) जणणिएँ छारपुंजु वरि जायउ, णउ कुसीलु मयणेणुम्मायउ।

(ii) जंपइ भो बुज्झहि जणाणि सारु, जिणवयणु दयावरु जणहँ तारु।

(iii) जो गुण गोवइ अप्पणा पयडा करइ परस्सु।

(iv) जिह समिलहिं सायरगयहि दुल्लहु जूयहु रंधु।

(v) जे सूर होंति सवरा हु वि सो तें णउ हणंति।

◇◇◇◇◇

अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर

पत्राचार अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम परीक्षा–2015

प्रश्नपत्र – प्रथम

अपभ्रंश – कवि और काव्य

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 100**

प्र. 1 प्राचीन साहित्य में अपभ्रंश के विभिन्न उल्लेखों के आधार पर अपभ्रंश भाषा की पूर्वापर सीमा निर्धारित कीजिये। 10

अथवा

अपभ्रंश भाषा की प्रमुख विशेषताएं बताइये।

प्र. 2 निम्नलिखिति छह कवियों में से किन्हीं चार कवियों का परिचय देते हुए उनकी रचनाओं पर प्रकाश डालिये :– 10x4=40

1. स्वयम्भू
2. पुष्पदन्त
3. वीर
4. नयनंदि
5. अब्दुर्रहमान
6. कण्हपा

प्र. 3 निम्नलिखित सात काव्यांशों में से किन्हीं पाँच का व्याख्यासहित अनुवाद कीजिये – 10x5

(क) वेसापमत्तु णिद्धणु हुउ इह वणि चारुदत्तु।।
कयदीणवेसु णासंतु परम्मुह छुट्टकेसु।।
जे सूर होंति सवरा हु वि सो ते णउ हणंति।।
वणे तिण चरांति णिसुणेवि खडक्कउ णिरु डरंति।
वणमयउलाइं किह हंणइ मूढु किउ तेहिं काइँ।

(ख) किं फलु इय सिविणयदंसणेण होसइ परमेसर कहि खणेण।।
इय णिसुणिवि णवजलहरसरेण सुणि सुंदरि पभणिउ मुणिवरेण।।

उत्तुंगैं भरभारिय धरेण होसइ सुधीरु सुउ गिरिवरेण।।
कुसुमरयसुरहिकयमहुअरेण चाइउ लच्छीहरु तरुवरेण।।
सुररमणीकीला मणहरेण सुरवंदणीउ वरसुरहरेण।।

(ग) तासु जणणि महदुक्खें तत्ती हुय णिरास खणि पगलियणेत्ती।।
हा हा किह सुव–दंसणु होसइ दुट्ठ विहिहिं पुणु–पुणु सा कोसइ।।
भाय–भाय हा किम जीवेसमि सुबाहु सुवत्तु किम पेच्छेसमि।।
हा हा किं बंधव णिचिंतउ महु सुउ विसमावत्थहिं पत्तउ।।
हउं तुव सरणि विएसें पत्ती करहि गंपि महु पुत्तहु तत्ती।।

(घ) कमलइं मेल्लवि अलि उलइं करि–गंडाइं महन्ति।
असुलहमेच्छण जाहं भलि ते ण वि दूर गणन्ति।।
जीविउ कासु न वल्लहउं धणु पुणु कासु न इट्ठु।।
दोण्णि वि अवसर–निवडिअइं तिण सम गणइ विसिट्ठु।।
बलि अब्भत्थणि महुमहणु लहुई हूआ सोइ।
जइ इच्छहु वड्डत्तणउ देहु म मग्गहु कोइ।।

(ङ) देह–विभिण्णउ णाणमउ जो परमप्पु णिएइ।
परम–समाहि–परिट्ठियउ पंडिउ सो जि हवेइ।।
अप्पा लद्धउ णाणमउ कम्म विमुक्कें जेण।
मेल्लिवि सयलु वि दव्वु परु सो परु मुणहि मणेण।।
णिच्चु णिरंजणु णाणमउ परमाणंद सहाउ।
जो एहउ सो संतु सिउ तासु मुणिज्जहि भाउ।।

(च) एक्कहिं इंदियमोक्कलउ पावइ दुक्खसयाइं।
जसु पुणु पंच वि मोक्कला तसु पुच्छिज्जइ काइं।।
जइ इच्छहि संतोसु करि जिय सोक्खहं विउलाहं।
अहवा णंदु ण को करइ रवि मेल्लिवि कमलाहं।।

मणुयत्तणु दुल्लहु लहिवि भोयहं पेरिउ जेण।
इंधणकज्जें कप्पयरु मूलहो खंडिउ तेण।।

(छ) गुरु दिणयरु गुरु हिमकरणु गुरु दीवउ गुरु देउ।
अप्पापरहं परंपरहं जो दरिसावइ भेउ।।
धंधइं पडियउ सयल जगु कम्मइं करइ अयाणु।
मोक्खहं कारणु एक्कु खणु ण वि चिंतइ अप्पाणु।।
मोक्खु ण पावहि जीव तुहुं धणु परियणु चिंतंतु।।
तो इ विचिंतहि तउ जि तउ पावहि सुक्खु महंतु।।

◇◇◇◇◇